काव्यलक्षणविमर्शः

डॉ. ललित किशोर शर्मा
प्राचार्यः सह-आचार्यश्च
श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय, सांगानेर, जयपुर

आचार्यभामहस्य काव्यलक्षणतः पण्डितराजजगन्नाथस्य रसगङ्गाधरपर्यन्तं समग्रसाहित्यशास्त्रस्य काव्यलक्षणेषु एवं ज्ञायते यत् साहित्यशास्त्रज्ञैः काव्यस्य लक्षणं पृथक्-पृथग्रूपेण अकारि। तेषु मतद्वयं वर्तेते -

1. शब्दप्रामुख्यपरम्।
2. शब्दार्थोभयप्रामुख्यपरम्।

सर्वप्रथमम् अस्माभिः इह शब्दमाधारीकृत्य काव्यलक्षणानि प्रस्तुतीक्रियन्ते।

1. काव्यादर्शे आचार्यदण्डिना भणितं काव्यलक्षणम् -

शरीरं तावदिष्टार्थव्यवछिन्ना पदावली[1]

काव्यस्य मौलिकः आधारः शब्दः एव। शब्दस्य माहात्म्यविषये कथयति आचार्यदण्डी-

इदमन्धं तमः कृत्स्नं जायेत भुवनत्रयम्।

यदि शब्दाह्वयं ज्योतिरासंसारान्न दीप्यते ॥[2] **इति।**

2. आचार्यजयदेवः लिखति चन्द्रालोकग्रन्थे -

निर्दोषा लक्षणवती सरीतिर्गुणभूषणा।

सालङ्काररसानेकवृत्तिर्वाक्काव्यनामभाक् ॥[3] **इति।**

निर्दोषाद्युक्तधर्मविशिष्टं काव्यमिति काव्यलक्षणम्।

3. रसगङ्गाधरकारः पण्डितराजजगन्नाथः ब्रुते -

रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्[4]

का च रमणीयता इत्युच्यते तर्हि -

आह्लादापरपर्यायलोकोत्तरचमत्कारशालित्वमेवार्थनिष्ठं रमणीयत्वम्।

आह्लादस्य अपरं नाम रमणीयता वर्तते।

सम्प्रति शब्दार्थावाधारीकृत्य काव्यलक्षणानि कानि कानि इति विवेचयामः।

1. आचार्यभामहेन प्रोक्तम् -

शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्। [5]

2. आचार्यरुद्रटस्य काव्यलक्षणमिदम् -

शब्दार्थौ काव्यम्। [6]

3. काव्यालङ्कारसूत्रवृत्तौ वामनाचार्येण कथितम् -

काव्यशब्दोऽयं गुणालङ्कारसंस्कृतयोः शब्दार्थयोः वर्तते।

काव्यं ग्राह्यमलङ्कारात् [7]

अलङ्कारादेव काव्यं ग्रह्यं भवतीत्यभिप्रायः।

सौन्दर्यमलङ्कारः – अलङ्कारः एव सौन्दर्य वर्तते।

काव्ये सौन्दर्यमिदं कथमायाति इत्युच्यते -

स दोषगुणालङ्कारहानादानाभ्याम्

गुणालङ्कारैः सह दोषरहितः शब्दार्थः काव्यम्।

4. वक्रोक्तिजीवितकारः कुन्तकः कथयति काव्यलक्षणम् -

शब्दार्थौ सहितौ वक्रकविव्यापारशालिनि।

बन्धे व्यवस्थितौ काव्यं तद्विदाह्लादकारिणि ॥ [8]

शब्दार्थौ सहितौ काव्यमिति।

5. आचार्यमम्मटभणितलक्षणम् -

तददोषौ शब्दाऽर्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वाऽपि।[9]

6. आचार्यवाग्भटेन प्रणीतम् -

साधुशब्दार्थसन्दर्भं गुणालङ्कारभूषितम् ।

स्फुटरीतिरसोपेतं काव्यं कुर्वीत कीर्तये ॥[10]

7. एकावल्यां विद्याधरेण प्रोक्तम् -

शब्दार्थवपुस्तावत् काव्यम्[11]

8. विद्यानाथेन स्वकीये प्रतापरुद्रीयमित्याख्ये ग्रन्थे कथितम् -

गुणालङ्कारसहितौ शब्दार्थौ दोषवर्जितौ।

गद्यपद्योभयमयं काव्यं काव्यविदो विदुः॥[12]

9. अच्युतरायः साहित्यसारे काव्यलक्षणं उपस्थापयति -

तत्र निर्दोषशब्दार्थगुणवत्त्वे सति स्फुटम्।

गद्यादिबन्धरूपत्वं काव्यसामान्यलक्षणम्॥[13]

10. धर्मसूरिणा साहित्यरत्नाकारे भणितम् -

सगुणाऽलङ्कृती काव्यं पदार्थौ दोषवर्जितौ।[14]

11. कविकण्ठाभरणे आचार्यक्षेमेन्द्रः कथयति -

काव्यं विशिष्टशब्दार्थसाहित्यसदलङ्कृति।[15]

12. आचार्यभोजदेवविरचितसरस्वतीकण्ठाभरणे -

निर्दोषं गुणवत्काव्यमलङ्कारैरलङ्कृतम् ।

रसान्वितं कविः कुर्वन्कीर्तिं प्रीतिं च विन्दति ॥ [16]

13. अलङ्कारचन्द्रिकायां न्यायवागीशः कथयति -

गुणाऽलङ्कारसंयुक्तौ शब्दाऽर्थौ रसभावगौ।

नित्यदोषविनिर्मुक्तौ काव्यमित्यभिधीयते ॥ [17]

14. काव्याऽनुशासनकारः प्रस्तौति लक्षणमिदम् -

शब्दार्थौ निर्दोषौ सगुणौ प्रायः साऽलङ्कारौ काव्यमिति। [18]

15. आचार्यराजशेखरेण उक्तम् -

गुणवदलङ्कृतं वाक्यमेव काव्यम्। [19]

16. आनन्दवर्धनाचार्येण प्रोक्तम् -

सहृदयहृदयाह्लादिशब्दार्थमयत्वमेव काव्यलक्षणम्। [20]

17. काव्याऽनुशासनकारहेमचन्द्रस्य मते -

'अदोषौ सगुणौ साऽलङ्कारौ च शब्दार्थौ काव्यम्' [21]

18. प्रकृतालङ्कारिकविश्वनाथकविराजमते लक्षणमिदम् -

'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' [22]

उपर्युक्तविवेचनेन ज्ञायते यत् साहित्यशास्त्रस्य विभिन्नकालक्रमे विद्वद्भिः विविधप्रकारैः काव्यलक्षणमुक्तम्। कालक्रमतः काव्यलक्षणप्रसङ्गेऽपि नूतनत्वं समायातम्। मुख्यतः उद्देश्यं काव्यरचनायाः धर्मार्थकाममोक्षादिप्राप्तिरेव सर्वेषाम् अयमेवाभिप्रायः। काव्यस्यात्मा रस इति निश्चिते सति शब्दार्थावेव काव्यस्य शरीरमिति प्राक्तनैः आधुनिकैश्च विद्वद्भिः प्रोक्तमिति।

सन्दर्भाः

1 काव्यादर्शः

2 काव्यादर्शः - आचार्यदण्डी 1/4 (पृ.सं.-6)

3 चन्द्रालोकः - (पीयूषवर्षजयदेवविरचितः) 1/7 (पृ.सं.-5)

4 रसगङ्गाधरः - 1/1 (पृ.सं.-7)

5 काव्यालङ्कारः - (आचार्यभामहविरचितः) - 1/16

6 काव्यालङ्कारः - (आचार्यरुद्रटविरचितः) - 2/1 (पृ.-8)

7 काव्यालङ्कारसूत्रवृत्तिः - (आचार्यवामनविरचितम्) - (1/1/1-3)

8 वक्रोक्तिजीवितम् - 1/7

9 काव्यप्रकाशः प्रथमो ऽध्याये।

10 वाग्भटालङ्कारः (वाग्भट्टप्रणीतम्) - 1/2 (पृ.3)

11 एकावली - (आचार्यविद्याधरप्रणीतम्)।

12 प्रतापरुद्रीयम् (श्रीविद्यानाथप्रणीतम्) - नायकप्रकरणम् - श्लोकसं.-1 (पृ.30)

13 साहित्यसारः - (अच्युतरायप्रणीतम्)।

14 साहित्यरत्नाकरः - (आचार्यधर्मसूरिविरचितम्)।

15 कविकण्ठाभरणम् - (आचार्यक्षेमेन्द्रः)

16 सरस्वतीकण्ठाभरणम् (आचार्यभोजदेवः) - 1/2 (पृ.2)

17 अलङ्कारचन्द्रिका - (न्यायवागीशप्रणीतम्)।

18 काव्यानुशासनम् - वाग्भट्टद्वितीयः।

19 काव्यमीमांसा - राजशेखरः - षष्ठोऽध्यायः - पदवाक्यविवेकः (पृ.24)

20 ध्वन्यालोकः - आनन्दवर्धनाचार्यः।

21 काव्यानुशासनम् (आचार्यहेमचन्द्रविरचितम्) - 1/11 (पृ.सं.-11)

22 साहित्यदर्पणम् - (पृ.सं.-24)